ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

सल्तनतकालीन भारतीय शिक्षा

सीमा जांगिड[*1]
[*1] सीनियर रिसर्च फेलो (पी.एच.डी.), इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश :– सल्तनतकाल (1206–1526 ई.) में मजहबी संकीर्णता से ग्रस्त एवं राज्य नियंत्रित इस्लामी शिक्षा का प्रचलन आरंभ हुआ। मुसलमानों ने प्राचीन भारतीय विद्या–केन्द्रों को नष्ट कर उनके स्थान पर मदरसों की स्थापना की, जहां तफसीर, हदीस, कलाम, फिक्ह आदि विषय पढाये जाते थे। बिस्मिल्लाह प्रायः घर पर ही होता था। मकतबों में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती थी। उच्चवर्गीय परिवार अपने पुत्रों के लिए घर पर ही शिक्षक नियुक्त कर देते थे। शिक्षण–प्रणाली सद्र–उस–सुदूर तथा उलेमाओं द्वारा संचालित की जाती थी। राज्य वक्फ एंव वजीफे प्रदान करता था। सभी सुल्तानों के अधीन इस्लामी शिक्षा अत्यंत फली–फूली। प्रांतीय शासको ने भी अच्छी शिक्षण व्यवस्था की। हिन्दू शिक्षा के लिए पाठशालाएं, टोल एंव व्यक्तिगत शिक्षक होते थे। सामाजिक कुरीतियों के कारण स्त्रियों के लिए पृथक पाठशालाओं एंव जन साधारण के लिए स्त्री–शिक्षा का प्रबंध न था। उच्चवर्गीय परिवार अपने घरों में ही शिक्षक नियुक्त कर देते थे।

मुख्य शब्द – सल्तनत, शिक्षा, मदरसे, पाठ्यक्रम

Cite This Article: सीमा जांगिड. (2017). “सल्तनतकालीन भारतीय शिक्षा.” *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(12), 322-328. https://doi.org/10.5281/zenodo.1135037.

प्रस्तावना

भारतवर्ष प्राचीनकाल से ही शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति के क्षेत्र में बढ़ा–चढ़ा था, परन्तु यहाँ जब–जब बाहरी जातियों ने आधिपत्य स्थापित किया, तब–तब उनके द्वारा अपनी नवीन शिक्षा–संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने का प्रयत्न किया गया है। जिस प्रकार अंग्रेजों ने आधुनिक शिक्षा–प्रणाली का सूत्रपात किया उसी प्रकार मुसलमानों ने भी प्राचीन भारतीय शिक्षा–प्रणाली के स्थान पर अपने ढंग से शिक्षा–प्रणाली लागू की। उन्होंने जिस प्रकार हिन्दुओं के धार्मिक स्थल मंदिरों को नष्ट–भ्रष्ट कर उनके स्थान पर मस्जिदों का निर्माण कराया था, उसी प्रकार प्राचीन विद्या मंदिरों के स्थान पर अनेक मदरसों की भी स्थापना कराई थी। मध्यकाल में विशेषकर सल्तनतकाल में भारत में राज्य का स्वरूप इस्लामी होने से शिक्षा का स्वरूप भी इस्लाम धर्म के अनुकूल रहा तथापि प्राचीन हिन्दू केन्द्रों पर हिन्दू शिक्षा भी दी जाती रही।

इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य–

1. सर्वप्रथम लक्ष्य इस्लाम धर्म के अनुयायियों में ज्ञान की वृद्धि करना था। इसी संदर्भ में मुहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना एक कर्त्तव्य है तथा बिना उसके मुक्ति नहीं मिल सकती।1 प्रत्येक मुस्लिम पुरूष एवं स्त्री के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है।
2. इस्लामी सिद्धांतो के अनुसार शिक्षा का एक लक्ष्य सदाचार की विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

3 मुस्लिम शासकों के सम्मुख विदेशी भारतीय भूमि पर अपनी शासन–व्यवस्था, भव्यता, सभ्यता–संस्कृति को सुदृढ़ करने की समस्या थी, जिसे वे शिक्षा के माध्यम से भी हल करना चाहते थे।
4 मदरसों का मुख्य उद्देश्य इस्लाम की सुरक्षा तथा उसके प्रचार के लिए विचार–प्रणाली और अनुशासन स्थापित करना था।
5 इन्हीं मदरसों के विद्यार्थियों से राज्य को सद्र, काजी, मुफ्ती और अन्य प्रशासकीय अधिकारी प्राप्त होते थे।2

शिक्षण–केन्द्र–

मध्ययुगीन भारत में दो प्रकार की शिक्षा संस्थाएं थीः–

1 मकतब
2 मदरसे

1 **मकतब–** यह प्राथमिक पाठशालाएं होती थी जिनमें अरबी और विशेष रूप से फारसी पढ़ना–लिखना सिखाया जाता था। इनमें कुरान पढ़ाया जाता था और बिना समझे ही विद्यार्थियों को उसे कठस्थ कर लेना पड़ता था। कभी–कभी प्रारम्भिक गणित भी पढाई जाती थी।
2 **मदरसे–** इस्लामी देशों में मदरसों की स्थापना का प्रचलन बहुत पहले से था और यह मदरसे उच्च शिक्षा के केन्द्र समझे जाते थे,3 जो केवल नगरों एवं शहरों में होते थे। जेसे– दिल्ली, अजमेर, लाहौर, आगरा, बदायूं, बीदर, जौनपुर, बंगाल, मालवा, अहमदाबाद, दौलताबाद आदि।

पाठ्यक्रम–

सल्तनकाल (1206 – 1526 ई.) के मदरसों का पाठ्यक्रम भारत से बाहर के मुस्लिम देशों से लिया गया था। धार्मिक शिक्षा को अत्यन्त महत्व दिया जाता था और सभी स्थानों पर जो मुख्य विषय पढ़ाये जाते थे, वे थे तफसीर (धर्म–ग्रंथों की टीका), हदीस (परम्पराएँ) और फिकह (न्याय–शास्त्र)। धार्मिक विषयों के अतिरिक्त पढ़ाये जाने वाले विषय थेः– साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, कलाम (वचन)।

छात्रों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। उन्हें मुफ्त किताबें दी जाती थी और रहने तथा भोजन की व्यवस्था भी निःशुल्क की जाती थी।4

शिक्षण – प्रणाली–

मध्यकालीन भारत में मुसलमानों की शिक्षा के लिए राज्य, न केवल वजीफा (अनुदान) ही देता था बल्कि काफी हद तक वह उसे नियंत्रित और निर्देशित भी करता था। अकबर के राज्यकाल के अन्तिम 25 वर्षो को छोड़कर शेष सारे मुस्लिमकाल में सद्र–उस–सुदूर (धर्म एवं न्यायमंत्री) ही शिक्षा का प्रधान होता था। उसका मुख्य कर्त्तव्य था कि वह राज्य में काजियों, मुफ्तियों, मीर अदलों, मुहत्सिबों और अन्य प्रशासकीय पदों के लिए विद्वान मुसलमान उलेमाओं को उपलब्ध कराता रहे। वह उलेमाओं (मुस्लिम विद्वानों) को संगठित करता था और अधिकतर स्वयं उनका प्रधान भी होता था। उसे शेख–उल–इस्लाम कहा जाता था। एक मुसलमान शासक का यह कर्त्तव्य था कि वह न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में शरीयत का अनुसरण करे बल्कि देश के शासन में भी उसका समावेश करे। इसलिए उसके लिए यह आवश्यक हो जाता था कि वह ऐसे मुसलमान विद्वानों के एक संगठन को बनाये रखे जो बराबर शरीयत के नियमों के पठन–पाठन और प्रचार में लगा रहे। उलमेओं का यह संगठन सद्र या शेख–उल–इस्लाम की देखरेख में कार्य करता था और सद्र का यह कार्य होता था कि वह राज्य के उलेमाओं पर कड़ी नजर रखे, शिक्षकों और निर्देशकों के रूप में उनकी स्थिति और योग्यताओं की जांच–पड़ताल करे और राज्य में सभी प्रकार की शिक्षा पर नियंत्रण रखे।5

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

इस कर्त्तव्य के पालन में सद्र को 'अध्यापकों और छात्रों' से सम्पर्क बनाये रखना पड़ता था, और उन विषयों के अध्ययन को निरूत्साहित या वर्जित भी करना पड़ता था जिनसे मुसलमानों की धार्मिक भावनाएं प्रभावित हो सकती थी।6 उसका एक कर्त्तव्य यह था कि वह ईमानदार और योग्य अध्यापकों एवं कुशाग्र बुद्धि तथा प्रतिभाशाली छात्रों को प्रोत्साहित करे और उन्हें उचित रूप से पुरस्कृत करे'। संक्षेप में वह लोगों की शिक्षा, और विचारों तथा नैतिक चरित्र पर नजर रखता था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मुसलमानों की, और विशेषकर उच्चवर्गीय मुसलमानों की शिक्षा उन मदरसों में होती थी जिन्हें या तो राज्य चलाता था या जो गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाये जाते थे। पर इस शिक्षा पर राज्य का कड़ा नियन्त्रण रहता था।

इस्लामी शिक्षा का स्वरूप–

भारत में मुसलमानों के आगमन से पूर्व ही इस्लामी देशों में एक विशेष प्रकार की शिक्षा पद्वति विकसित हो चुकी थी। मुसलमान परिवार के एक बच्चे की शिक्षा आमतौर पर घर में ही शुरू हुआ करती थी। जब उसकी आयु चार वर्ष, चार मास और चार दिन की हो जाती थी तो बिस्मिल्लाह की रस्म होती थी और बालक से तरव्ती पर आलिफ (अक्षर) बे, ते, से आदि लिखवा कर उसकी शिक्षा का श्रीगणेश किया जाता था। उसके बाद यह प्रार्थना की जाती थी कि ईश्वर इस बालक को विद्वान बनाए। तत्पश्चात सगे–सम्बन्धियों में मिठाई भी बांटी जाती थी। इस रस्म के लिए कभी–कभी लोग अपने पुत्रों को सन्तों के पास भी ले जाया करते थे। अमीर हसन सोजी अपने पुत्र को शेख निजामुद्दीन औलिया के पास ले गया था और शेख ने एक सादे कागज पर बिस्मिल्लाह, आलिफ, बे, ते, से, जीम लिखकर उस कागज को बालक को थमा दिया। इस रस्म के बाद माता–पिता की आर्थिक स्थिति के आधार पर यह तय किया जाता था कि बालक को मस्जिद से सलंग्न मकतब या किसी शिक्षक के निजी मकतब में भेजा जावे। अमीर एवं शाही परिवार के शहजादों की शिक्षा के लिए घर पर ही शिक्षक नियुक्त कर दिये जाते थे।

उदाहरण– सुल्तान इल्तुतमिश ने अपने ज्येष्ठ पुत्र नासिरूद्दीन महमूद शाह को इतिहास का बोध कराने के लिए बगदाद से अदावुस्सलातीन और मआस्सिलातीन नामक दो पुस्तके मंगवाई। बलबन ने अपने पुत्रों खाने शहीद एवं बुगरा खां को अदावुस्सलातीन पढ़ाने के लिए ताजुद्दीन बुखारी को नियुक्त किया।7

सुल्तानों के अधीन शिक्षा–

दिल्ली के सुल्तानों में यद्यपि कुछ निरक्षर थे पर सभी शिक्षा में गहरी रूचि रखते थे। गजनवी सुल्तानों ने इस क्षेत्र में नेतृत्व ग्रहण किया था। अपने शासनकाल में सुल्तान महमूद गजनी ने एक मदरसे की स्थापना की जहां कि मध्य एशिया और फारस तथा अन्य देशों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आया करते थे। इस मदरसे का प्रधानाचार्य उन्सूरी था। उसके उत्तराधिकारियों के समय जब गजनी से राजधानी हटकर लाहौर बन गई तो लाहौर शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया। हसन निजामी ने अपनी पुस्तक ताजुलमासिर में लिखा है कि मुहम्मद गौरी ने अजमेर में अनेक मदरसों की स्थापना की जो कि सम्पूर्ण भारत में अपने ही ढंग के थे।8

शिक्षा का प्रसार वास्तव में तो गुलामवंश के द्वितीय शासक इल्तुतमिश के शासनकाल से शुरू हुआ। वह शिक्षा के मामले में उदार था। यह जानकारी तबकात–ए–नासिरी के लेखक मिनहास–उस–सिराज ने दी है। फुतूहात–ए–फिरोजशाही के वर्णन से स्पष्ट है कि उसने मदरसे स्थापित कराये थे। उसके द्वारा स्थापित एक मदरसे की मरम्मत का कार्य फिरोज तुगलक ने पूरा किया था।

> "The madarsa (college) of Sultan Shamsu-d-din Altms had been destroyed; I rebuilt it and furnished it with sandal-woods doors."9

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

इल्तुतमिश ने मुहम्मद गौरी के नाम पर दिल्ली में मदरसा–ए–मुइजी तथा अपने ज्येष्ठ पुत्र नासिरूद्दीन महमूद के नाम पर मदरसा–ए–नासिरी रखा। उसने मिनहास–उस–सिराज को मदरसे का प्रधानचार्य नियुक्त किया। उसके दरबार में अमीर खुहानी तथा नासिरूद्दीन आदि विद्वान रहते थे। सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद ने अपने 20 वर्षो के शासनकाल में शिक्षा के प्रसार कार्य को प्रोत्साहन दिया एवं जालन्धर में एक मदरसा खुलवाया।

सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद के शासनकाल (1246–60 ई.) में उसके वजीर बलबन ने मदरसा–ए–नासीरिया खुलवाया तथा मिनहास–उस–सिराज को प्रधान शिक्षक नियुक्त किया। बलबन का दरबार विद्वानों, उलेमाओं, कवियों और दार्शनिकों के लिए विख्यात था। बरनी ने लिखा है कि फारसी के दो विख्यात कवि मीर हसन और अमीर खुसरो उसके दरबार को सुशोभित करते थे। बरनी ने शाहजादा मुहम्मद की साहित्यिक रूचि के बारे में बड़ी प्रशंसा की है।10 स्वयं बलबल अपने पुत्र मुहम्मद को विद्वानों की संगति में रहने की सलाह देता था।11

खिलजी वंश में शिक्षा–

अलाउद्दीन खिलजी पढ़ा–लिखा नहीं था और न शिक्षा के महत्व को समझता था। बरनी ने अपनी पुस्तक तारीख–ए–फिरोजशाही में उसे अनपढ़ बताया है।12 इसके विपरीत कुछ ऐसे मत है जो अलाउद्दीन के विद्यानुराग को प्रमाणित करते हैं। उसने दिल्ली में हौज–ए–खास से जुडे एक मदरसे की स्थापना की जिसकी मरम्मत फिरोजशाह तुगलक ने करवाई। अलाई दरवाजे के एक शिलालेख में उसके लिए ये शब्द खुदे हुए हैं– ज्ञान व धर्म के मंच का रक्षक, विद्यालयों तथा पवित्र स्थानों के नियमों को सुदृढ़ीकरण करने वाला। फरिश्ता के मतानुसार वह अमीर हसन और अमीर खुसरो को पेंशन देता था। उसके काल में दर्शन एवं अध्यात्म की उन्नति हुई। इन विषयों पर लिखी गई पुस्तकों में कुतुब–उल–कलूब, इला–उल–उलूम आदि प्रसिद्ध हैं। निजामुद्दीन औलिया, सैयद ताजुद्दीन इस युग के प्रमुख दार्शनिक थे। शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पुस्तकालयों की स्थापना की गई थी और विद्वानों को संरक्षण मिला था। अमीर अर्सलान इस काल का प्रसिद्ध इतिहासकार था। कबीरूद्दीन ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'फतहनामा' इसी काल में लिखा था। स्पष्ट है कि इस युग में शिक्षा की उन्नति हुई थी जिसके बारे में फरिश्ता ने प्रशंसा की है।13

तुगलक वंश में शिक्षा–

तुगलक शासकों को भी मदरसों की स्थापना में रूचि थी। मुहम्मद–बिन–तुगलक ने दिल्ली में 1346 ई. में एक मदरसे की स्थापना की और उसी से संलग्न एक मस्जिद बनवाई।14 इसका वर्णन प्रसिद्ध कवि बद्रछात्र ने प्रभावपूर्ण ढंग से किया है। उसके समय में ही न्याय करने के लिए एक कुरान की पुस्तक तैयार कराई गई थी। बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक को महान शासक माना है और उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की।15 वह स्वयं शिक्षा–प्रेमी था। उसे इतिहास, राजनीति, दर्शन, कविता, तर्क आदि में बेहद रूचि थी। फिरोज तुगलक के शासनकाल में भी शिक्षा की उन्नति हुई। वह विद्वानों का आश्रयदाता था जैसे–अफीक एवं बरनी विद्वानों का सम्यक सम्मान करने के उद्देश्य से उसने अंगूरी महल का निर्माण करवाया था। दान एवं पेंशनों के लिए 136 लाख रूपये खर्च किए थे जिनमें से 36 लाख रूपये विद्वानों पर खर्च हुए थे। फुतूहात–ए–फिरोजशाही लिखकर उसने अपने साहित्य–प्रेम एवं फारसी ज्ञान का परिचय दिया। उसी ने पुरातत्व सामग्री की सुरक्षा के लिए सर्वप्रथम प्रयास करते हुए अशोक स्तंभ जालंधर से दिल्ली मंगवाया। उसने लगभग 30 मदरसे स्थापित कराये जिनमें से हौजखास के निकट स्थित मदरसा–ए–फिरोजशाही का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जमालुद्दीन रूमि उस मदरसे के प्रधानाचर्य थे। सीरी एवं फिरोजाबाद में भी इसी प्रकार के मदरसे स्थापित कराये गये। इनके खर्च के लिए भू–अनुदान, गरीब प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए वजीफों की व्यवस्था की गई थी। इस समय में 18000 गुलामों को शिक्षित किया गया था। फिरोज के शासनकाल में अनेक प्रसिद्ध इतिहासकार, दार्शनिक, न्यायशास्त्री, धर्म एवं कानून के व्याख्याता हुए। फिरोजशाह का समय भारत में मध्यकालीन शिक्षा के इतिहास में स्वर्ण युग कहा जा सकता है। उसने मदरसों के बारे में 'फुतूहात–ए–फीरोजशाही' में बड़ा सुंदर वर्णन किया है।16

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

लोदी वंश में शिक्षा–

सिकंदर लोदी ने आगरा को अपनी राजधानी बनाया जो शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। उसने राज्य में अनेक मदरसे स्थापित किये और उनके लिए दूर–दूर से विद्वानों को आमंत्रित किया। वह स्वयं गुलरूख के उपनाम से कविताएं रचता था। उसने अपने सैनिक अधिकारियों के लिए साहित्यिक शिक्षा अनिवार्य कर दी थी। उसने मथुरा एवं मारवाड़ में भी मदरसे स्थापित किये। उसने नरवर के हिन्दू मंदिरों को तोड़कर उनके स्थान पर मस्जिदें बनवाई तथा वहाँ एक मदरसे की स्थापना करवाई, मथुरा में भी उसने ऐसा ही किया था। इस संबंध में तारीख–ए–दाऊदी के लेखक अब्दुल्ला ने वर्णन किया है।17 अरब, पर्शिया और बुखारा आदि के विद्वान आगरा में उसके पास आकर ठहरते थे। इस काल में ही हिन्दुओं ने पहली बार फारसी का अध्ययन शुरू किया था और उर्दू का आरंभ भी मुख्य रूप से इसी युग में हुआ। फरिश्ता ने हिन्दुओं द्वारा फारसी के अध्ययन के बारे में लिखा है।18 इस काल में अनेक पुस्तकों की रचनाएं तथा अनुवाद कार्य हुए। अरगर महाबेदक का फारसी में अनुवाद तिब्बी सिकन्दी रखा गया जो एक आयुर्वेदिक ग्रंथ था।

सल्तनकाल में प्रान्तीय शासक भी शिक्षा की प्रगति पर ध्यान देते थे। दक्षिण में बहमनी शासकों ने अनेक मकतब और मदरसे स्थापित करवाये। अहमदशाह (1422–35 ई.) ने गुलबर्गा में एक मदरसा उस समय के विशिष्ट विद्वान सैय्यद मुहम्मद गेसू के सम्मान में खोला। महमूद गंवा ने, जो मुहम्मदशाह (1463–82 ई.) का वजीर था, 1472 ई. में बीदर में प्रसिद्ध मदरसा बनवाया इसके ग्रन्थालय में हजारों मूल्यवान ग्रंथों का संकलन था। उस समय बीजापुर, गोलकुण्डा, मालवा, खानदेश, जौनपुर, मुल्तान, गुजरात और बंगाल प्रमुख शिक्षण–केन्द्र थे। जौनपुर कला–साहित्य की उच्च शिक्षा हेतु विख्यात था एवं उसे शिराज–ए–हिन्द कहा जाने लगा। मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन ने (1469–1500 ई.) अपनी स्त्रियों को शिक्षा दिलवाने हेतु अध्यापिकाओं को नियुक्त किया था। बंगाल में हुसैनशाही शासकों ने हिन्दू और मुस्लिम शिक्षा के प्रसार में काफी योगदान दिया। सुल्तान नासिरशाह ने महाभारत का बंगला भाषा में अनुवाद करवाया।

हिन्दू शिक्षा का स्वरूप–

इस काल में हिन्दू व मुसलमानों की अपनी–अपनी शिक्षण पद्धियां, संस्थाएं एवं पाठ्यक्रम थे। मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि प्राचीन उच्च शिक्षा के केन्द्र (विश्वविद्यालय) नष्ट हो गये19 एवं फिर अनेक सदियों तक हिन्दू शिक्षा के विशाल केन्द्र उत्तरी भारत में स्थापित न किये जा सके। यह कहना न्यायसंगत न होगा कि इन विश्वविद्यालयों के अन्त के साथ ही प्राचीन हिन्दू–शिक्षा पद्धति भी समाप्त हो गयी।

हिन्दू बालक की शिक्षा पांच वर्ष से प्रारंभ होती थी। ब्राम्हणों में विद्यारम्भ संस्कार उपनयन से प्रारंभ होता था, किन्तु विद्यारम्भ के लिए हिन्दू समाज में कोई निश्चित आयु न थी। इसके लिए शुभ दिन व लग्न निश्चित किया जाता था। ईश्वर का पूजन कर बालक के हाथों में लकड़ी की तख्ती एवं खड़िया पकड़ा कर उससे कुछ अक्षर लिखवाये जाते थे और इस प्रकार से उसकी विद्यारम्भ होती थी। उसी दिन इस शुभ अवसर पर प्रीतिभोज भी दिया जाता था।

शिक्षण संस्थाएं–

1 **पाठशालायें–** प्राथमिक शिक्षा के ये केन्द्र शहर में या तो किसी अमीर की हवेली में या मंदिर से संलग्न होते थे और पाठशालयें गांव में पेड़ के नीचे या खुले स्थान में लगा करती थी। पाठयक्रम में अक्षर ज्ञान, स्वर, व्यंजन, शब्दों का उच्चारण, लिखना–पढ़ना, प्रारम्भिक गणित आदि सम्मिलित थे। यहां प्रातः से लेकर सूर्यास्त तक पढ़ाई हुआ करती थी। समाज का यह उत्तरदायित्व था कि वह पाठशालाओं के अध्यापकों की आवश्यकता की पूर्ति करे।

2 **टोल–** ये उच्च शिक्षण केन्द्र थे। ये टोल मुख्यतः फूस के बने होते थे और जहां गुरू एवं शिष्य साथ बैठकर विद्या विषयक चर्चा करते थे। यहां विद्यार्थियों की संख्या प्रायः 20–25 तक होती थी। अलबेरूनी ने विद्यार्थियों के बारे में लिखा है कि उनका कर्त्तव्य ब्रम्हचर्य का पालना करना, भूमि पर शयन, वेद, काव्य, ब्रह्म विद्या एवं धर्मशास्त्र का अध्ययन करना है। यहां मुख्यतः संस्कृत, भाषा,

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

साहित्य, भूगोल, काव्य, व्याकरण, छन्द, ज्योतिषशास्त्र, न्याय–इतिहास, दर्शन, तन्त्र–मन्त्र, वेद, उपनिषद्, पुराण और चिकित्साशास्त्र हिन्दू शास्त्र आदि विषय पढ़ाये जाते थे। कुछ ऐसे भी टोल थे जहां संगीत, भक्तियोग, अलंकार, कोष, तन्त्र–मन्त्र और युद्ध की भी शिक्षा दी जाती थी। प्रत्येक छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुसार आठ या दस दर्जे तक टोल में विद्योपार्जन करता था। इस काल में उत्तरी भारत में अनेक उच्च शिक्षा के केन्द्र थे– इनमें बनारस, मथुरा, प्रयाग, अयोध्या, नांदिया, मिथिला, थानेश्वर आदि अधिक प्रसिद्ध हैं। हिन्दू शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र बनारस का उल्लेख करते हुए अमीर खुसरो ने लिखा है कि यहां चारों ओर से कलाकार विद्या तथा कला की खोज में आते रहते है।

3 **व्यक्तिगत शिक्षक–** शहर एवं गांवों में व्यक्तिगत शिक्षक भी अपने घरों पर या किसी स्थान पर या मंदिर के चबूतरे पर शिक्षा दिया करते थे। ये शिक्षक प्रादेशिक भाषाओं में पढ़ाते थे और उनके पाठ्यक्रम में गणित, व्याकरण, पहाड़े, संस्कृत आदि विषय हुआ करते थे। नाप–तौल, हिसाब–किताब का ज्ञान प्रत्येक बालक के लिए आवश्यक समझा जाता था। बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा मुफ्त दी जाती थी। शिक्षक सम्मानपूर्ण एवं सीधा–सादा जीवन व्यतीत करते थे।

भारतीय रूचि के विषयों जैसे प्राचीन इतिहास और दर्शन, संस्कृत भाषा और साहित्य, हिन्दू धर्म और सामाजिक संगठन की शिक्षा के लिए सरकारी और गैर सरकारी मकतबों और मदरसों में शायद ही कोई व्यवस्था थी।

स्त्री शिक्षा–

भारत में मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप समाज में अनेक कुरीतियां फैल गई। जैसे–कन्यावध, दहेजप्रथा, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा आदि। इन सब का प्रत्यक्ष परिणाम एवं प्रभाव स्त्री शिक्षा पर पड़ा। इस काल में लड़कियों के लिए पृथक पाठशालाओं की कोई भी व्यवस्था न थी। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़कियां कभी–कभी लड़कों के साथ बैठकर ही पढ़ा करती थी। शाही घरानों में राजकुमारियों के लिए कभी–कभी पण्डित नियुक्त कर दिये जाते थे जो कि उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान कर दिया करते थे। हिन्दू परिवारों में ऐसी बहुत कम स्त्रियां थी जिन्हें उच्च शिक्षा प्रदान की गई हो। लड़कियों की शिक्षा प्रायः घर में ही हुआ करती थी। हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों में ही लड़कियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने की रीति एवं परम्परा न थी। हाँ इतना आवश्य था कि जिन लड़कियों को पढ़ने–लिखने का शौक होता था वे घर की चाहरदीवारी में रहकर ही अपने शौक को पूरा कर लिया करती थी।20 इस काल में स्त्री शिक्षा प्रचलित थी परन्तु उसका लाभ सम्पन्न वर्ग के लोग ही उठा पाते थे। इल्तुतमिश की पुत्री रजिया अरबी और फारसी भाषाओं में पारंगत थी। उसे कुरान जुबानी याद था। यही नहीं, उसे सैनिक शिक्षा भी दी गई थी। वह घुड़सवारी और तलवार चलाने में प्रवीण थी। इससे पता चलता है कि सुल्तानों और अमीरों ने अपने परिवार की स्त्रियों को शिक्षित करने की व्यापक एवं विशेष व्यवस्था की होगी। इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कान एवं जलालुद्दीन खिलजी की पत्नी मल्केजहाँ राज्य प्रशासन कार्य में दक्ष थी। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि स्त्री–शिक्षा की व्यवस्था सुचारू रूप से की गई होगी। हिन्दुओं में भी अनेक विदुषी महिलाओं के उदाहरण मिलते हैं। अवन्ती सुंदरी, देवलरानी, रूपमती, पद्मावती और मीराबाई इस युग की सभ्य शिक्षित नारियां थी। अवन्ती सुंदरी ने प्राकृत काव्य के शब्दकोश का निर्माण किया था। मीराबाई ने कृष्णभक्ति से संबंधित अनेक सुंदर पदों की रचना की। अशरफ ने उस समय की अनेक महिलाओं की चर्चा की है। इस काल में नृत्य, संगीत, चित्रकला, घरेलू जीवन की शिक्षा दी जाती थी।

मध्ययुगीन भारत में मुसलमानों की शिक्षा व्यवस्था ने न केवल उनकी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का रूप ही निश्चित किया बल्कि उनके चरित्र एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोण को भी निर्मित किया। इस्लामी शिक्षा का मुख्य दुगुण यह था कि वह मजहबी विचारों से इतनी प्रभावित थी कि जनसाधारण का आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक हित साधन करने वाले अन्य विषय गौण रह जाते थे।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1135037

मजहबी दृष्टिकोण और अत्यधिक राज्य नियंत्रण से मध्यकालीन भारत की शिक्षा–व्यवस्था बड़ी ही दोषपूर्ण थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] रसीद, ए, सोसायटी एण्ड कल्चर इन मेडिवल इण्डिया (1206–1556), फर्म के.जे. मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1969, पृ. 150।
[2] श्रीवास्तव, ए.एल., मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1964, पृ.–77।
[3] हुसैन, युसुफ., ग्लिम्पसेज ऑफ मेडिवल इण्डियन कल्चर, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1959, पृ. 71।
[4] श्रीवास्तव, ए.एल., मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1964, पृ.–82।
[5] हसन, इब्न. दि सेन्ट्रल स्ट्रक्चर ऑव दि मुगल एम्पयार, मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970, पृ. 257।
[6] वही
[7] गुप्त, शिवकुमार, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 65–66।
[8] हुसैन, युसुफ, वही।
[9] Elliot III, Fatuhat-I Firoz-Shahi P. 383.
[10] Barni, Tarikh – i- Firoz- Shahi / Sir H.M. Elliot; edited by John Dowson, Sind Sagar Academy, Lahore, Ed. I Pakistan, 1974, PP. 108-109. (A reprint of Chap. 15 of H.M. Elliot"s The History of Inida by its own Historians, Vol.III, London, 1987, PP. 93-268).
[11] Ferista, Vol. I, P. 267.
[12] "He (Allauddin) was a man of no learning and never associated with men of learning. He clould not read or write a letter." – Elliot, Histroy of India by its own Historians, Vol.III, Trubner and Co., 8 and 60, Paternoster ROW, London, 1871, P. 168.
[13] "Neither did there in any age, appear such a course of learned men from all parts. Fourty Five doctors, skilled in the sciences, were professors in the universities."
[14] हुसैन, युसूफ, वही, पृ 74।
[15] "Muhammad Tuglag was unquestionably the ablest man among crowned heads of middle ages of all kings, who had sat upon the throne of Delhi since the Muslim conquest; he was undoubtedly the most learned and accomplished." – Tarikh- i- Firozshahi (Elliot) Vol. III, P. 235-36.
[16] "Among the gifts which God bestowed upon me, his humble servant was a desire to erect public buildings, so I built many mosques, colleges and monasteries, that the learned and the elders, the devout and the holy might worship god in there edifices, and aid the kind builder with their prayers." Fatuhat-i-Firoz-Shahi, P. 382.
[17] "He entirely ruined the shrines of Mathura and turned principal Hindu places of worship into carvanasrais and colleges." Elliot, Histroy of India by its own Historians, vol. IV, Trubner and Co., 8 and 60, Paternoster ROW, London, 1872, P. 450.
[18] "The Hindus who had hither to never learned person, commenced during his reign to study Muhammadan literature."
[19] रेवर्टी, तबकाते नासिरी, एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकता, 1897, पृ. 552।
[20] जाफर, एस. एम., एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया, खुदाबंद स्ट्रीट, पेशावर सिटी, 1936, पृ. 4।

*Corresponding author.
E-mail address: rajpalbsnl@ gmail.com